Vol 3 Issue 11 Dec 2013 ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume-3, Issue-11, Dec-2013
ISSN 2230-7850

Available online at www.isrj.net

वर्तमान दौर में उर्दू मीडिया : विश्लेषणात्मक अध्ययन

मोहम्मद फ़रियाद , मु.अफ़सर अली राईनी
सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय,हैदराबाद
पीएच.–डी, जनसंचार, संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र, महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, ,वर्धा

सारांश:भारतीय पत्रकारिता के शुरुआत के करीब 42 वर्षों के बाद उर्दू पत्रकारिता का जन्म भी जन्म हुआ। उर्दू पत्रकारिता की शुरूआत कलकत्ता से हुई लेकिन आज उर्दू पत्रकारिता का प्रकाशन भारत के करीब–करीब हर राज्यों से हो रहा है। खबरों की वैचारिक प्रस्तुति के लिहाज से उर्दू पत्रकारिता एक मिशनरी पत्रकारिता के रूप में कार्य कर रही है लेकिन आर्थिक संसाधनों की कमी की वजह से उर्दू पत्रकारिता को भी बाजार का रूख करने को मजबूर होना पड़ रहा है। आर्थिक संसाधनों के कमी का असर उर्दू पत्रकारिता की तकनीक पर भी पड़ा है। संसाधनों की कमी के बावजूद भी हैदराबाद की उर्दू मीडिया धीरे–धीरे ही सही अपना विस्तार कर रही है।

भूमिका–

उर्दू पत्रकारिता का प्रारम्भिक काल–

हिन्दी के पत्रकारिता शब्द को उर्दू भाषा में "सहाफ़त"कहते हैं दरअसल जिसको हम "सहाफत"शब्द कहते हैं वह अरबी भाषा के "सहिफ़ा" से बना है। इस"सहिफ़ा"के शाब्दिक अर्थों में सफ़हा(हिन्दी में पृष्ठ के),रेसाला(हिन्दी में पत्रिकाएँ),वरक(पेज के),किताब,या आसमानी किताब(दैवीय पुस्तक)के होता है। एक निश्चित समय के अंतराल पर प्रकाशित होने वाली मुद्रण सामाग्री को भी सहिफ़ा कहा जाता है।इस लिए यहाँ पर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हिन्दी के पत्रकारिता शब्द को उर्दू में सहाफ़त कहा जाता है। और हिन्दी में जिन लोगों को पत्रकार कहा जाता है उर्दू भाषा में उनको सहाफ़ी कहा जाता है। भारत में उर्दू पत्रकारिता की शुरुआत फ़ारसी पत्रकारिता के आँचल से शुरू होता है,क्योंकि जिस वक्त उर्दू पत्रकारिता इस धरा पर आने के लिए बेचौन थी,उस वक्त फ़ारसी भाषा एक मज़बूत हालत में थी।चूंकि फ़ारसी और उर्दू भाषा कि लिपि एक ही थी इसलिए उर्दू भाषा के प्रचार व प्रसार में फ़ारसी भाषा का बहुत गहरा योगदान है।

यहाँ पर इस बात का ज़िक्र करना बहुर ज़रूरी है कि चूंकि फ़ारसी भाषा सैकड़ों वर्षों तक शासन तंत्र कि भाषा रह चुकी थी इसलिए इस का विकास तो निश्चित था मगर यह भाषा कभी भी आम हिंदुस्तानियों कि भाषा नहीं बन पाई थी। इसी दरमयान एक ऐसी भाषा भी पनप रही थी जिसका हिन्दुस्तान के कई हिस्सों में विकास हो रहा था। यह भाषा दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों में पनप रही थी। इस भाषा को साधु–संतों और सूफियों ने बहुत परवान चढ़ाया। इसी तरह से एक ऐसे भाषा का विकास हुआ जिसमें अरबी,फ़ारसी,हिन्दी,संस्कृत और तुर्की भाषा के बेशुमार शब्द शामिल हुए।

पहले उर्दू पत्र का प्रकाशन–

भारतीय पत्रकारिता के शुरुआत के करीब 42 वर्षों के बाद उर्दू पत्रकारिता का जन्म भी जन्म हुआ। उर्दू का पहला समाचार पत्र 1822ई.से "जामे–ए–जहाँनुमा" के नाम से कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। उर्दू के इस पहले समाचार पत्र के संपादक मुंशी सदासुख लाल थे। चूंकि उस वक्त कलकत्ता पत्रकारिता और सत्तातंत्र दोनों का केंद्र था,इसलिए इस उर्दू पत्र को बहुत जल्दी ख्याति मिली, और उसके बाद तो उर्दू पत्रकारिता ने ऐसी उड़ान लगाई कि उसनें ज़्यादातर भाषाई समाचार पत्रों को पीछे छोड़ दिया।

"जामे–ए–जहाँनुमा" के बारे में ये कहा जाता है कि यह पत्र सत्ता तंत्र का मुख पत्र था लेकिन उर्दू पत्रकारिता के विशेषज्ञ माने जाने वाले जी.ड.चन्दन ने अपनी किताब "उर्दू सहाफ़त का सफ़र"में निम्न बातों का ज़िक्र किया है–

"इस पत्र का मालिक हरिहर दत्त राय ईस्ट इंडिया कंपनी का क्लर्क था,लेकिन सरकारी कर्मचारी होने के बावजूद उसने हमेशा सरकार कि कमियों ,कोताहियों पर नुक्ताचीनी की। सरकार हरिहर दत्त राय के इस रवैये से से खुश नहीं थी। इसके बदले में सरकार ने सारे अनुदान "जामे–ए–जहाँनुमा" से वापस ले लिए। बदले में हरिहर दत्त राय नें समाचार पत्र के मास्टर हैड पर जो सरकारी निशान था,उसको हटा दिया। "(उर्दू सहाफ़त का सफ़र ,पृष्ठ संख्या 124–125)"

उर्दू का दूसरा समाचार पत्र शमसुल–अख़बार 1923ई.में प्रकाशित हुआ। इस पत्र के संपादक राम मनी ठाकरे थे। यह समाचार पत्र ज्यादा दिन तक नहीं चल सका और पाँच सालों के अंदर ही बंद हो गया। इस पत्र के संपादक ने समाचार पत्र को बंद करते वक्त कहा था उन्हें इस पत्र से दुख,परेशानी,सत्ता तंत्र के प्रकोप के सिवा कुछ हासिल नहीं हुआ।

11अप्रैल 1880ई.में लंदन टाइम्स के हवाले से यह खबर आई कि 1835ई.में भारतीय समाचार पत्रों कि संख्या सिर्फछःथी। लेकिन 1887 ई.में इसकी संख्या अप्रत्याशित ढंग से बढ़ी और इस कि संख्या 97 तक जा पहुँची। और इन पत्रों का कुल मिलाकर सर्कूलेशन एक लाख पचास हजार के करीब था।

कलकत्ता और दिल्ली के अलावा हिन्दुस्तान के दूसरे क्षेत्रों से उर्दू पत्रकारिता कि शुरुआत हो चुकी थी। हिन्दुस्तान के कोने कोने से उर्दू के समाचार पत्र प्रकाशित होने लगे थे। पंजाब में उर्दू पत्रकारिता की शुरुआत अंग्रेजों के क़ब्ज़े के बाद शुरू होता है। पंजाब का पहला उर्दू समाचार पत्र "शिमला–ए–अख़बार" था। इस समाचार पत्र के संपादक शेख अब्दुल्ला थे। यहाँ पर एक बात गौर करने वाली है कि शेख अब्दुल्ला कि मातृ भाषा उर्दू थी मगर उन्होंने इस उर्दू पत्र को देवनागिरी में प्रकाशित किया।इस पत्र को 1848ई.में प्रकाशित किया गया। उर्दू भाषा और उर्दू पत्रिका का विकास केंद्रित

मोहम्मद फ़रियाद , मु.अफ़सर अली राईनी , "*वर्तमान दौर में उर्दू मीडिया : विश्लेषणात्मक अध्ययन*" Indian Streams Research Journal Vol-3, Issue-11 (Dec 2013): Online & Print

न होकर पूरे हिन्दुस्तान में था। ये बात नहीं है कि उर्दू पत्र सिर्फ दिल्ली और पंजाब से ही प्रकाशित हुए बल्कि देश के कोने कोने से इसके विकास की गाथा लिखी गयी । दिल्ली और पंजाब के अलावा जिन शहरों में उर्दू पत्रों का विकास हुआ उनके नाम निम्न लिखित हैं–

लखनऊ,अलीगढ़,आगरा,कानपुर,मिर्ज़ापुर,मेरठ,बनारस आदि ऐसे केंद्र थे जहाँ पर उर्दू पत्रों का विकास पर्याप्त विकास हुआ।

कई किताबों के अनुसार लखनऊ में उर्दू पत्रकारिता का आरंभ तो बहुत पहले हो गया था,लेकिन उर्दू पत्रकारिता को बहुत करीब से देखने वाले अख्तर शहंशाही के अनुसार लखनऊ में उर्दू पत्रकारिता की शुरुआत 1840 ई.के आस पास शुरू हुई। लेकिन उनके इस बात का कोई लिखित सबूत नहीं हैं। दूसरे जानकारों के अनुसार लखनऊ का पहला उर्दू समाचार पत्र "लखनऊ अख़बार" के नाम से 1848ई .में प्रकाशित हुआ। इस पत्र के संपादक लाल जी थे।

लखनऊ के दो उर्दू पत्रों का ज़िक्र करना यहाँ ज़रूरी है। पहले पत्र का नाम "तिलिस्म–ए–लखनऊ" था,जबकि दूसरे पत्र का नाम "सहर सामरी" था।

आज हिन्दुस्तान के ज्यादातर हिस्सों से उर्दू के पत्र प्रकाशित हो रहे हैं,खास तौर से उत्तर प्रदेश की बात की जाए तो लखनऊ से ष्राष्ट्रीय सहाराष जैसा नेशनल न्यूज़ पेपर यहाँ से प्रकाशित हो रहा है। आग भी यहाँ का बहुत लोकप्रिय समाचार पत्र है। इन दोनों पत्रों की सबसे अच्छी बात ये है कि दोनों पत्रों का इंटरनेट संस्करण भी उपलब्ध है। इन पत्रों में हफ्ते के सातों दिन अलग–अलग सप्लिमेंट आते हैं।

मुंबई का मशहूर उर्दू दैनिक इंकलाब और भारत का सबसे बड़ा प्रिन्ट मीडिया घराना दैनिक जागरण के बीच समझौते से इस क्षेत्र में काफी सुधार आने के इमकान हैं। इसके अलावा करीब–करीब हर ज़िला मुख्यालयों से उर्दू के समाचार पत्र प्रकाशित हो रहे हैं।

बिहार राज्य का सबसे बड़ा उर्दू दैनिक क़ौमी तंजीम है। इस पत्र के दो संस्करण प्रकाशित हो रहे हैं। इसके अलावा बहुत सारे छोटे पत्र भी कई शहरों से प्रकाशित हो रहे हैं।

कलकत्ता आज भी उर्दू पत्रकारिता का केंद्र बना हुआ है। यहाँ आज भी उर्दू के तीन बड़े दैनिक प्रकाशित हो रहे हैं। आज़ाद हिन्द,अख़बार–ए–मशरिक़ और राष्ट्रीय सहारा इन तीनों पत्रों की अपनी एक खास अहमियत हैं। चूंकि ष्राष्ट्रीय सहारा नेशनल न्यूज़ पेपर हैं इसलिए इसके कई संस्करण प्रकाशित होते हैं मगर बाकी दोनों दैनिकों का प्रकाशन सिर्फ कलकत्ता से ही होता है।यहाँ के पत्रों की सबसे बड़ी खूबी ये है कि इन का उर्दू पाठकों का बड़ा गहरा रिश्ता है। अपने कई तरह के कार्यक्रमों के द्वारा यह हमेशा जनता से जुड़े रहते हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद दिल्ली सभी भाषाओं की पत्रकारिता का केंद्र बिन्दु है। दिल्ली से उर्दू भाषा के कई पत्र प्रकाशित हो रहे हैं । दिली के बड़े उर्दू दैनिकों में दैनिक मिलाप राष्ट्रीय सहारा और सहाफ़त यहाँ के बड़े उर्दू दैनिक हैं। इनमें से सबसे पुराना उर्दू दैनिक मिलाप ही है । वैसे तो इस पत्र की शुरुआत महाशय खुशहाल के द्वारा 1923ई.में लाहौर से किया गया था। फिर बाद में हैदराबाद और दिल्ली से भी इसके प्रकाशन शुरू हुए।

मिलाप अपनी भाषा को लेकर हमेशा सुर्खियों में रहा है।इस पत्र की लिपि भले ही उर्दू हो मगर इसके भाव पूरी तरह से हिन्दी के ही होते हैं। इस पत्र में अगर कोई विज्ञापन हिन्दी भाषा में है तो हू–ब–हू उसी चीज़ को उर्दू लिपि में लिख दिया जाता है। इस पत्र की एक और बड़ी खूबी ये है कि इस के पहले दोनों पृष्ठ विज्ञापनों से भरे होते हैं। तीसरे पेज़ से समाचारों का सिलसिला शुरू होता है।

सहाफ़त और राष्ट्रीय सहारा नए दौर के नए तर्ज़ के समाचार पत्र हैं। इन दोनों पत्रों में बेहतरीन ले–आउट डिज़ाइन का ख्याल रखा जा रहा है। इन पत्रों में क्षेत्रीय,राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय समाचारों का अच्छा तालमेल होता है। इसमें देश के नामी मीडिया जानकार इन पत्रों में कालम और फीचर लिखते हैं।

वर्तमान में मुंबई भी उर्दू मीडिया का एक बड़ा केंद्र है। यहाँ से भी कई उर्दू के बड़े समाचार पत्र प्रकाशित हो रहे हैं । इन पत्रों में उर्दू टाइम्स सहाफ़त इंकलाब और राष्ट्रीय सहारा यहाँ के बड़े उर्दू दैनिक हैं। पेपर और सामग्री कि दृष्टि से यहाँ के उर्दू समाचार पत्र किसी भी दूसरी भाषा के समाचार पत्रों से तनिक भी कमज़ोर नहीं हैं। इन पत्रों के सप्लिमेंट अंग्रेजी पत्रों से थोड़े भी कमजोर नहीं हैं। मुंबई के ये चारों पत्र इंटरनेट पर भी अपनी दस्तक दे चुके हैं।

अगर आर.एन.आई की रिपोर्ट की बात करें तो इस वक्त भारत में कुल उर्दू समाचारों की संख्या 2906 है ,इन पत्रों में दैनिकों के अलावा दो दिवसीय,तीन दिवसीय,साप्ताहिक,पाक्षिक,मासिक आदि पत्र शामिल हैं। इस रिपोर्ट में यह भी कहा गया है की जो हमें आकड़े प्राप्त हुए हैं इनमें दैनिक उर्दू पत्रों की संख्या पूरे भारत में 534 है,जबकि दो और तीन दिवसीय प्रकाशित पत्रों की संख्या 21, साप्ताहिक पत्रों की संख्या 1348,377 पाक्षिक पत्र,533 मासिक पत्र–पत्रिका प्रकाशित हो रहे हैं। आकड़ों के लिहाज़ से ये रिपोर्ट तो बहुत उत्साहवर्धक है मगर धरातल की सच्चाई इस से अलग है । कुछ समाचार पत्र सिर्फ ऑफिस रेकॉर्ड में रखने के लिए ही प्रकाशित होते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य–

1.हैदराबादी उर्दू मीडिया की स्थिति का पता करना।
2.उर्दू मीडिया में कार्यरत पत्रकारों की शैक्षणिक स्थिति का अध्ययन करना।
3.उर्दू मीडिया की विषय–वस्तु का अध्ययन करना।

उपकल्पना–

1.हैदराबादी उर्दू मीडिया तकनीक की दृष्टी से पिछड़ा हुआ है।
2.हैदराबादी उर्दू मीडिया में प्रशिक्षित पत्रकारों की भारी कमी है।
3.हैदराबादी उर्दू मीडिया काफी हद तक अनुवाद पर निर्भर है।

अध्ययन का क्षेत्र व सीमा–

हंलाकि उर्दू मीडिया का विस्तार संपूर्ण देश में है लेकिन, शोधार्थी द्वारा उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति का प्रयोग करते हुए हैदराबाद की उर्दू मीडिया को अध्ययन क्षेत्र बनाया गया है।

शोध प्रविधि–

शोधार्थी द्वारा निम्न शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है–
1.अंतरवस्तु विश्लेषण
2.प्रश्नावली प्रविधि
3.साक्षातकार प्रविधि
4.निदर्शन प्रविधि
5.द्वितीयक सामग्री
6.अवलोकन प्रविधि

हैदराबादी उर्दू पत्रकारिता प्रारम्भिक स्थिति–

हैदराबाद से प्रकाशित उर्दू समाचार पत्रों का अतीत बहुत गौरवशाली रहा है,क्योंकि सत्तातंत्र हमेशा उर्दू भाषा और उर्दू पत्रकारिता के विकास के लिए चिंतित रहा। सत्तातंत्र की इसी चिंता का प्रतिफल था कि हैदराबाद में उस समय कक्षा एक से लेकर शोध तक पढ़ाई उर्दू माध्ययम में होती थी। उस्मानिया विश्वविद्यालय इस का बेहतरीन उदाहरण है। जहाँ तक हैदराबाद में उर्दू पत्रकारिता के प्रारंभ की बात है तो इसकी शुरुआत 1860 ई. में "आफताब–ए–दक्कन" के नाम से शुरू हो गया था। इस पत्र के संस्थापकों में क़ाज़ी मुहम्मद कुतूब का सबसे प्रमुख है। एक दूसरी किताब के अनुसार हैदराबाद में उर्दू पत्रकारिता की शुरुआत 1859 ई. में ही हो गया था।चिकित्सकीय जानकारी से भरपूर इस पत्र को लोगों को सहीं और सस्ती जानकारी देने की मकसद से शुरू किया गया था । इस तरह ये बात भी सिद्ध हो जाती है कि जो विकास संचार कि बात हम आज कर रहे हैं, हैदराबाद के उर्दू पत्रों ने करीब दो सौ साल पहले ही कर दिया था। हैदराबाद के उर्दू समाचार पत्र इस बात से भी और दूसरे समाचार पत्रों से से अलग हैं क्योंकि हर जगह समाचार पत्र धार्मिक,साहित्यिक,और धार्मिक कारणों से नहीं बल्कि शुद्ध वैज्ञानिक कारणों से यहाँ की उर्दू पत्रकारिता की शुरुआत हुई थी। इस पत्र के बारे में बहुत विस्तृत जानकारी तो नहीं मिल पायी है मगर कासिम अली,और सज्जन लाल के अनुसार यह उर्दू का पहला हैदराबादी समाचार पत्र था। इन्हीं के अनुसार में ही "जैनूल–आबेदिन" के नाम से एक पत्र प्रकाशित हुआ था,लेकिन इस पत्र के बारे में कोई विस्तृत जानकारी नहीं मिल पायी है। ये पत्र निज़ाम इस्टेट के द्वारा प्रकाशित करवाया गया था। शुरुआती हैदराबादी उर्दू प्रेस कि कोई ठोस और स्पष्ट जानकारी जानकारी नहीं मिल पाई है। लेकिन उर्दू पत्रकारिता को बहुत करीब से देखने वाले सज्जन लाल नें अपने शोध में इस बात को साबित किया है कि "आफताब–ए–दक्कन" हैदराबाद से प्रकाशित होने वाला पहला उर्दू दैनिक था। और इसी के बाद से "खुर्शीद–ए–दक्कन","हज़ार दास्तान"उस वक्त प्रकाशित होने वाले उर्दू के प्रमुख समाचार पत्र थे। इसी दौर के कुछ प्रमुख उर्दू दैनिकों में "पैक–ए–आसफ़ी","सफ़ीर–ए–दक्कन"अफसर–उल–अख़बार, अख़बार–ए– आसफ़ी आदि शामिल हैं।

1920ई.में हैदराबाद का एक बहुत ही प्रसिद्ध समाचार पत्र प्रकाशित हुआ। इस उर्दू दैनिक का नाम "रहबर–ए–दक्कन" था, इस समाचार पत्र को 1920ई.में अहमद मोहिउद्दीन ने प्रकाशित किया। हैदराबाद का ये बेहद लोकप्रिय समाचार पत्र स्वतंत्रता हासिल होने तक चलता रहा और ये 1948ई.में बंद हो गया। लेकिन अपने बंद होने के आठ महीने बाद इस पत्र का प्रकाशन फिर से शुरू हुआ।

1920ई.में हैदराबाद का एक बहुत ही प्रसिद्ध समाचार पत्र प्रकाशित हुआ। इस उर्दू दैनिक का नाम "रहबर–ए–दक्कन" था। इस समाचार पत्र को 1920ई.में अहमद मोहिउद्दीन ने प्रकाशित किया। हैदराबाद का ये बेहद लोकप्रिय समाचार पत्र स्वतंत्रता हासिल होने तक चलता रहा और ये 1948ई.में बंद हो गया। लेकिन अपने बंद होने के आठ महीने बाद इस पत्र का प्रकाशन फिर से शुरू हुआ।

दुबारा जब इस पत्र का संचालन हुआ तो इस पत्र के संपादक मंजूर हसन अंसारी थे। पहले जो इसका नाम "रहबर–ए–दक्कन" था दुबारा शुरू होने के पश्चात इसका नाम "रहनुमा–ए–दक्कन"हो गया। 1968ई.में मंजूर हसन अंसारी इस समाचार पत्र से अलग हो गए। उसके बाद से ही इस समाचार पत्र के संपादक सैयद विकारुद्दीन हैं । और इनके बड़े भाई सैयद लतीफुद्दीन इस दैनिक उर्दू समाचार पत्र"रहनुमा–ए–दक्कन" के मैनेजिंग एडिटर हैं।

वर्तमान संदर्भ में अगर बात की जाए तो इस समाचार पत्र की गिनती भारत के बड़े समाचार पत्रों में और अगर हैदराबाद की जाए तो इसकी चौथे बड़े उर्दू समाचार पत्रों में हो रही हैं। हैदराबाद में पुलिस एक्शन के बाद मुसलिन नौजवानों को एक सकारात्मक दिशा देने में इस पत्र नें बहुर महत्वपूर्ण रोल अदा किया।

अपने क्षेत्रीय न्यूज़ के प्रस्तुति की वजह से इस का इसका पाठकों से गहरा रिश्ता है। आज भी बड़े धार्मिक महोत्सवों,कोई बड़ी घटना घट जानें के बाद इसका जो विशेष परिशिष्ट आता है उसका पाठकों को बेसब्री से इंतेजार रहता है।

वर्तमान में इस समाचार पत्र ही करीब 20,000प्रतिदिन प्रकाशित होती हैं। जहाँ तक टाइपिंग सॉफ्टवेयर का सवाल है तो पहले "खत्ताती"विशेष प्रकार की टाइपिंग पद्धति का इस्तेमाल होता था,जबकि वर्तमान में प्रॉफेश्नल टाइपिंग उर्दू सॉफ्टवेयर इनपेज का का इस्तेमाल हो रहा है। इस विशेष टाइपिंग उर्दू सॉफ्टवेयर के कई संस्करण अब–तक बाज़ार में आ चुके हैं। वर्तमान में इनपेज़ 2009 और इनपेज़ 2010 का इस्तेमाल हो रहा है। इसके रोटरी से छपाई का काम भी अब बंद हो चुका है। ज्यादातर उर्दू समाचार अब ऑफसेट और दूसरे प्रिंटिंग टेक्नालजी का सहारा ले रहे हैं।यहाँ पर ये बात विशेष उल्लेखनीय है कि 1948ई. से पूर्व यानि आज़ाद हैदराबाद तक "रहबर–ए–दक्कन"का रोल मजलिस हिमायती था। एक तरह से ये मजलिस का मुखपत्र भी था।नवाब मीर उस्मान अली खान के समय में पत्र को विशेष सहयोग भी मिला।इसके अलावा इसके धार्मिक चरित्र के कारण भी इस समाचार पत्र को विशेष अहमियत हासिल थी।

सियासत–

वर्तमान में हैदराबाद का सबसे ज्यादा लोकप्रिय उर्दू दैनिक समाचार पत्र "सियासत" ही है। इस का प्रकाशन 15अगस्त 1949ई.को शुरू हुआ। उस वक्त इस पत्र के संपादक आबिद अली खान थे। इस पत्र को आबिद अली खान और महबूब हुसैन जिगर दोनों ने मिलकर शुरू किया था,महबूब अली जिगर और आबिद अली खान दोनों सरकारी कर्मचारी थे।ये ऐसा दौर था जब पूरे हैदराबाद में घोर अनियमित्ता और मुसलमान नौजवानों में निराशा के भाव उत्पन्न थे। ऐसे में एक ऐसे समाचार पत्र अत्यंत आवश्यकता थी जो नौजवानों को सही राह दिखा सके। इसी सार्थक उद्देश्य को दिमाग में रख कर इस पत्र को शुरू करने का फैसला किया गया। इसी उद्देश्य को पूरा करने के के लिए उन्होंने अपनी सरकारी नौकरी भी छोड़ दी। इस उर्दू पत्र ने न सिर्फ हैदराबाद में बल्कि पूरे भारत में अपनी सार्थकता कि मिसाल पेश की।

दैनिक समाचार पत्र "सियासत"सिर्फ एक समाचार पत्र के रूप में नहीं बल्कि हमारी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने का साधन बन गया।

इस समाचार पत्र कि सबसे बड़ी खूबी ये थी ये अतीत के गौरवशाली क्षण को तो याद रखता था मगर भविष्य के के चौखट से झाँक कर। इस पत्र के संस्थापकों मे से एक महबूब हसन जिगर ने अपने लेखों के द्वारा नौजवानों कों को राह दिखाने का एक ज्वलंत एवं गम्भीर कार्य को अंजाम दिया। इसके अलावा इस समाचार पत्र से जुड़े एक और पत्रकार क़ाज़ी अब्दुल गफ़्फ़ार नें वैज्ञानिक आधारों से परिपूर्ण प्रगतिवादी लेखों से नौजवानों की सोच को नई दृष्टि दी।

मुंसिफ़–

वर्तमान में उर्दू का दूसरा सबसे बड़ा उर्दू दैनिक "मुंसिफ़" ही है। इस पत्र कि शुरुआत 1979ई.में महमूद अंसारी द्वारा किया गया। खराब आर्थिक स्थिति के कारण ये समाचार पत्र बंद होने के कगार पर पहुँच गया था। लेकिन एक अप्रवासी भारतीय उद्योगपती खान लतीफ खान ने समाचार पत्र को खरीद कर इसे नया जीवनदान दिया। 1997 ई.में अधिग्रहण के बाद इस उर्दू दैनिक को नया रूप दिया।

सबसे पहले तो ऊँची तनख्वाह देकर बेहतरीन उर्दू पेशेवरों को इकट्ठा किया गया। पुरानी रोटरी को हटाकर ऑफसेट मुद्रण तकनीक का इस्तेमाल शुरू हुआ।

कोम्पोसिंग और ग्राफिक्स के लिए अंग्रेजी और तेलगु समाचारों के पेशेवरों को लाया गया। जब दुबारा जब इसको शुरू किया गया तो बड़े पैमाने पर इस समाचार का विज्ञापन किया गया।इन सब चीजों का नतीजा भी बहुत जल्द निकला और "मुंसिफ़" हैदराबाद का सबसे ज्यादा प्रकाशित होने वाला उर्दू दैनिक बन गया।

रोज़नामा ऐतमाद–

हैदराबाद से प्रकाशित हैदराबाद का "रोज़नामा ऐतमाद" सबसे नया उर्दू दैनिक है। इस पत्र का प्रकाशन 2005ई.से हो रहा है। सही मायनों में अगर तकनीक का कोई उर्दू पत्र लाभ उठा रहा है तो वो है "रोज़नामा ऐतमाद"। इस पत्र के लिए जिस मुद्रण मशीन का इस्तेमाल हो रहा है वह बहुत ही आधुनिक है। और इस तरह कि मशीन हैदराबाद में सिर्फ अंग्रेजी पत्र "जीम ीपदकन"के पास है। इस समाचार पत्र का संबंध एक राजनैतिक परिवार से है इसलिए इस पत्र के कोई आर्थिक कमी नहीं है। इस पत्र का भी जब प्रकाशन शुरू किया गया था तो इसमें भी हैदराबाद और पूरे भारत के बेहतरीन उर्दू पेशेवरों को जमा किया गया। इस समाचार पत्र के संपादक नसीम आरफ़ी को बनाया गया। नसीम आरफ़ी के बारे में कहाँ जाता है कि वर्तमान में प्रकाशित सभी उर्दू दैनिकों के साथ वो काम कर चुके हैं। उनके पास उर्दू पत्रकारिता का करीब 40 सालों का अनुभव है।

दूसरे उर्दू समाचार पत्रों के मुक़ाबले इस पत्र में ज्यादा सप्लिमेंट प्रकाशित होते हैं। इस पत्र में करियर गाइडेंस,बच्चों ,महिलाओं,धार्मिक,फिल्म आदि से संबंधित पूरी सामग्री होती है। इस पत्र के साथ भी भारत के बड़े लेखक,कवि और मीडियाविद् जुड़े हुए हैं।

करीब पाँच साल पहले ही इसका इंटरनेट संस्करण भी आया। इंटरनेट पर भी इसको पढ़ने वालों की संख्या पूरी दुनिया में फैली हुई है। ख़बरों के लिए ज्यादातर उर्दू समाचारों की तरह"ऐतमाद" भी ए.एन.आइ.और पी.टी.आई का ही सहारा लेता है। बाकी स्थानीय ख़बरों के लिए इसके अपने संवादाता होते हैं।

राष्ट्रीय सहारा–

"राष्ट्रीय सहारा" को भारत का एकमात्र राष्ट्रीय उर्दू दैनिक होने गर्व हासिल है।"राष्ट्रीय सहारा" एक साथ देश के नौ स्थानों से प्रकाशित होता है। उसमें हैदराबाद भी शामिल है। हैदराबाद से दैनिक उर्दू "राष्ट्रीय सहारा" का प्रकाशन 2006ई.से शुरू हुआ। हैदराबाद से पहले "राष्ट्रीय सहारा"नई दिल्ली,गोरखपुर,कलकत्ता,बंगलोर,पटना,लखनऊ,कानपुर,और रांची से प्रकाशित होता था।

चूंकि इस पत्र को औद्योगिक समूह द्वारा चलाया जाता है इसलिए पत्र के पास पूंजी कि कोई कमी नहीं है। और समाचार पत्र को बिल्कुल पेशेवर अंदाज में चलाया जाता है। 12 पृष्ठों के इस उर्दू दैनिक सभी पृष्ठ रंगीन होते हैं। हैदराबाद में सिर्फ चार पृष्ठों को ही तैयार किया जाता है।

इस समाचार पत्र में मुद्रण का कार्य साक्षी के प्रेस में होता है। इसका अपना मुद्रण प्रेस नहीं है।

"राष्ट्रीय सहारा" भी करीब चार पहले अपनी दस्तक इंटरनेट पर दे चुका है। अब उसके सारे संस्करणों के पत्र ई.पेपर के रूप में इंटरनेट पर मौजूद हैं। ख़बरों की अगर बात की जाए तो इसमें राष्ट्रीय खबरों को ज्यादा महत्व दिया जाता है। सहारा समूह के इस पत्र के संपादक सुब्रत राय "सहारा"खुद ही हैं"बंगाल गज़ट" से शुरू भारतीय पत्रकारिता नें अपनी उपयोगिता को इस कदर साबित किया है कि उससे किसी भी समाज का अछूता अब रहना संभव नहीं है। सुबह हमारे आँख खोलने से लेकर रात को आराम के लिए बिस्तर पर जाने तक हम पूरी तरह से मीडिया के संजाल में फँसे हुए हैं। इस तरह से हम देख सकते हैं कि हमारे देश का कोई भी क्षेत्र,कोई भी समाज,या कोई भी वर्ग मीडिया के जादू से बचे हुए नहीं हैं।

मीडिया शब्द के यहाँ प्रयोग से इस का अर्थ ये लिया जाना चाहिए कि इसमें प्रिन्ट,रेडियो,एलेक्ट्रोनिक,न्यू मीडिया और कोई भी भाषा हिन्दी,उर्दू,अंग्रेजी या कोई भी इस के मध्ययम हो सकते हैं।

सूचना एवं तकनीक के विकास ने मीडिया के सभी माध्ययमों एवं सभी भाषाई प्रेस के ढांचे में आमूल–चूल परिवर्तन किया है। इस असर भी व्यापक पैमाने पर देखा का रहा है।

तकनीकी क्रांति के दौर में हैदराबादी उर्दू मीडिया–

सेटेलाइट,फाइबर ओपटिक्स और इसकी मदद से तैयार हुए कम्प्यूटरों के महाजाल इंटरनेट नें सूचनाओं की बाढ़–सी ला दी है। यह प्रौद्योगिकी ही थी,जिसने सूचनाओं को एक आम आदमी के दरवाजे पर पहुँचाया। प्रौद्योगिकी सस्ती हुई और न सिर्फ कम्प्यूटर ही एक दूसरे से जुड़े,बल्कि जितने भी भी सूचना के माध्यम हैं ,जैसे–रेडियो,टीवी,समाचार पत्र दूरसंचार और कम्प्यूटर इन सभी के एकीकरण की बात चल निकली।

इस सूचना तकनीक की क्रांति नें समाचार पत्रों की वस्तु स्थिति में व्यापक बदलाव किए हैं। लिथो से प्रिंटिंग अब गुजरे समय की बात हो गई है। तकनीक के विकास का ही असर है कि आज सारे उर्दू समाचार पत्रों की छपाई आफ़सेट या कम्प्यूटरीकृत माध्यमों से हो रही है।जहाँ छपाई का काम पहले बहुत बोझिल,उबाऊ और समय लेने वाला होता था,आज पहले से ज़्यादा कॉपी पहले से कम समय में निपट जाता है । ये सब तकनीक का ही असर है।

वर्तमान में सभी समाचार पत्रों के पास बड़ी बड़ी समाचार एजेंसियों के उपभोक्ता बने हुए हैं। अब न्यूज़ एजेंसी द्वारा उपलब्ध किये पिन की मदद से समाचार ऑफिस में बैठ कर आप पूरी न्यूज़ न्यूज़ हासिल कर सकते हैं। इसके अलावा इन्हीं एजेंसियों के द्वारा अलग अलग विषयों पर बड़ी मात्रा में कालम और फ़ीचर भी मौजूद होते हैं। समाचार पत्र अपनी उपयोगिता को दृष्टिगत रखते हुए इन का इस्तेमाल करते हैं।

संदर्भ सामग्री के रूप में भी उर्दू समाचार पत्र बड़े पैमाने पर सूचना तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं। इंटरनेट पर मौजूद सैंकड़ों उर्दू वैबसाइट और उर्दू पोर्टल भी हैदराबादी उर्दू पत्रों के लिए वरदान साबित हो रहे हैं। इन का भी ये समाचार पत्र बड़े पैमाने पर इस्तेमाल कर रहे हैं।

इस के अलावा पहले कोम्पोसिंग भी उर्दू मीडिया में बहुत

मुश्किल हुआ करती थी ,पहले एक तरह का साँचा तैयार किया जाता था और प्रयोग वाले शब्द को उस साँचे मे फिट किया जाता था और उस के बाद प्रिंटिंग का काम होता था। इस प्रौद्योगिकी की सबसे बड़ी कमी ये थी कि अगर इस में वो शब्द पहले से फिट नहीं होता था तो इस शब्द का टाइप नहीं हो पाता था।

इसलिए प्रोफेशनल इनपेज के आ जाने से उर्दू टाइपिंग में में क्रांतिकारी बदलाव आया था।

शुरू में इनपेज का प्रोफेशनल संस्करण 2000ई. में आया। इस का नया संस्करण 2003 ई.,2005 ई,2009 ई.और 2010 ई.आया है,जिसका वर्तमान में बड़े पैमाने पर इस्तेमाल हो रहा है।

वर्तमान उर्दू प्रेस में एडवांस संस्करण का फ़ोटोशाप और पेज मेकर का इस्तेमाल हो रहा है। इस तरह वर्तमान उर्दू प्रेस ने भी नई सूचना तकनीक से पूरा फ़ायदा उठाते हुए अपने आपको दूसरे मीडिया के समक्ष ला खड़ा किया है।

इसी की बदौलत उर्दू समाचार पत्रों नें अपनी उपस्थिति इंटरनेट संस्करण पर भी जोरदार तरीक़े से दर्ज कराई है। आज सिर्फ "रहनुमा–ए–दक्कन" को छोड़ कर सभी उर्दू समाचार पत्रों के ई.पेपर प्रकाशित होते हैं।इसी तकनीकी विकास के फलस्वरूप उर्दू समाचारों नें अपनी पहुँच को समुदाय विशेष नें गंभीरता से बनाया है। इसी के फलस्वरूप उर्दू पत्रों की भूमिका समाज के हर हिस्सों पर पड़ा है। और उसकी भूमिका भी पहले के मुक़ाबले अधिक हुई है।

सूचना क्रांति के फलस्वरूप सेटेलाइट चौनलों नें पूरी दुनियाँ में अपना जाल फ़ैलाकर रख दिया है,और इससे अछूता हैदराबाद भी नहीं हैं। विगत 10 सालों के अंदर यहाँ पर भी कई उर्दू के सेटेलाइट चौनल और केबल चौनल खुले हैं।

हैदराबाद का सबसे पुराना उर्दू सेटेलाइट चौनल ई.टीवी उर्दू है।और इस चौनल के संस्थापक रामों जी राव हैं। वर्तमान में इस चौनल को दुनियाँ के 78 देशों में दिखाया जाता है।

इस चौनल में हर दो घंटे पर 30 मिनट का उर्दू बुलेटिन प्रसारित होता है। इसके अलावा शाम में "दक्कन नामा"स्थानीय ख़बरों के लिए प्रसारित होता है।ये 24 घंटे प्रसारित होने वाला देश का पहला उर्दू चौनल है

इस के अलावा हैदराबाद से प्रसारित होने वाला दूसरा उर्दू चौनल "मुंसिफ़ टीवी"है । ये चौनल भी 24 वों घंटे प्रसारित होता है। ये भी सेटेलाइट चौनल है। इस चौनल पर भी निम्न नामों से न्यूज़ बुलेटिन प्रसारित हो रहे हैं–

हैदराबाद डाइरी
प्राइम न्यूज़
मुंसिफ़ उत्तराखंड,यू.पी के नाम से बुलेटिन
इंटरनेशनल न्यूज़

आदि प्रसारित हो रहा है। समाचारों की बुलेटिन हर दो घंटे के बाद लगातार जारी रहता है। इसके अलावा "उर्दू टीवी" के नाम से एक केबल चौनल का भी प्रसारण हो रहा है। इस चौनल पर भी उर्दू बुलेटिनों का प्रसारण 2 घंटों के अंतराल पर जारी रहता है।

कुछ तेलगु चौनलों पर भी 30 मिनट से लेकर दो घंटे का उर्दू प्रोग्राम प्रसारित होता है। इनमें से कुछ चौनलों के नाम निम्नलिखित है–

साक्षी टीवी
राज टीवी
एच०एम टीवी
टीवी एन 9
दूरदर्शन हैदराबाद केंद्र

सूचना तकनीक और हैदराबादी उर्दू रेडियो–

हैदराबाद में रेडियो पर उर्दू भाषा के प्रसारणों की स्थिति संतोषजनक नहीं है। दैनिक उर्दू पत्र "सियासत" समूह का ही एक कम्यूनिटी रेडियो चलता है। लेकिन इस रेडियो चौनल से सिर्फ recorded प्रोग्रामों का ही प्रसारण होता है और यहाँ से कोई न्यूज़ बुलेटिन का प्रसारण नहीं होता है।एफ़एम चौनलों से उर्दू–हिन्दी मिश्रित भाषा के प्रोग्राम प्रसारित होते हैं। जिनको उर्दू नहीं कहा जा सकता है।

इसके अलावा सस पदकपं तंकपव से भी उर्दू समाचारों का एक 10 मिनट का बुलेटिन प्रसारित होता है।

निष्कर्ष –

वर्तमान में हैदराबादी उर्दू प्रेस की स्थिति को संतोषजनक नहीं कहा जा सकता है। हाँ!इतना अवश्य है कि इसकी स्थिति भारत के दूसरे हिस्सों से प्रकाशित उर्दू पत्रों से बेहतर है।

प्रथम तो ये की पूरी हैदराबादी उर्दू पत्रकारिता अनुवाद पर टिकी हुई हैं,और प्रकाशित समाचारों में से अधिकांशतः अनुवादित सामग्री ही होती है। उर्दू पत्रों में अनुवाद का एक बड़ा सेक्शन होता है। इसमें पत्रकारिता से जुड़े बड़े नाम भी अनुवाद में ही उलझ कर रह जाते हैं। इसलिए इस बात की बहुत आवश्यकता है राष्ट्रीय और प्रादेशिक स्तर पर कोई उर्दू न्यूज़ एजेंसी हो,जहाँ से उर्दू पत्रों को आसानी से उर्दू में खबरें उपलब्ध हो जाया करें।

सभी हैदराबादी उर्दू पत्रों में पत्रकारों और दूसरे सहायक कर्मचारियों की भारी कमी है। समाचार पत्रों की गुणवत्ता ठीक करने के लिए ये ज़रूरी है कि आवश्यकता अनुरूप ही कर्मचारी रहें। उर्दू पत्रों की ये भी एक कमी है कि लोकल ख़बरों के लिए भी इनको दूसरे पत्रों के संवादाताओं पर निर्भर रहना पड़ता है। शायद ही कोई हैदराबादी उर्दू का पत्र हो ("राष्ट्रीय सहारा"को छोड़ कर) जिसके संवादाता हैदराबाद से बाहर रहकर पत्र के लिए रिपोर्टिंग कर रहा हो। ये बहुत ही अफ़सोसनाक सूरत–ए–हाल है। उर्दू पत्रों को वैश्विक होने की आवश्यकता है, और अपने संवादाताओं को जहाँ तक संभव हो फैलाने की आवश्यकता है। उर्दू संवाद एजेंसी होने से गुणवत्तापूर्ण ख़बरों को के साथ–साथ पत्रकारों का अच्छा–ख़ासा समय भी बच जाएगा जिससे पत्रकारों को मौलिक और रचनात्मक कार्य करने का मौक़ा मिल जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1– वैदिक , डॉ.वेद प्रताप ,हिन्दी पत्रकारिता दृ हिन्दी बुक सेंटर दिल्ली –1992
2– नटराजन, जे. , भारतीय पत्रकारिता का इतिहास – प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली
3–मेहदी, सैयद मुमताज़, हैदराबाद के उर्दू रोज़नामों की अदबी खिदमात– एन.सी.पी.यू.एल ,नई दिल्ली,1998
4– आबिदि, इक़बाल, हैदराबाद में उर्दू सहाफ़त – दाएरा प्रेस,आफ़ताबनूर बाज़ार,हैदराबाद
5– तिवारी, डॉ.अर्जुन, हिन्दी पत्रकारिता का बृहद इतिहास, वाणी प्रकाशन,दरियागंज,नई दिल्ली
6– अनवर,फ़रीदा , मगरीबी बंगाल में उर्दू सहाफ़त– तस्लीम आरिफ़

प्रेस ,कलकत्ता
7– नक़वी,हिना,पत्रकारिता एनं जनसंचार–उपकार प्रकाशन
8– सहाफ़त सियासत समाचार पत्र, सियासत उर्दू पत्र,हैदराबाद
9– कबीर ,डॉ.हुमायूँ , मसाएल और इमकानात–एजुकेशनल
पब्लिशिंग हाउस,दिल्ली
10–चन्दन.जी.डी.,उर्दू सहाफ़त का सफर – एजुकेशनल पब्लिशिंग
हाउस,दिल्ली

मु.अफ़सर अली राईनी
पीएच.–डी, जनसंचार, संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र,
महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, ,वर्धा

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net